एक है स्थापना की सिरोमणी(सेरमनी)। दूसरी सिरोमणी(सेरमनी) होती है जब कुछ खोला जाता है। यहाँ सिर्फ स्थापना किया जाता है। ओपनिंग सिरोमणी(सेरमनी) होगी नहीं। तुम समझ सकते हो .... संगमयुग पर हमने स्थापना की सिरोमणी(सेरमनी) की है वह चल रही है। जब स्थापना हो जावेगी तो फिर विनाश भी हो जावेगा। स्थापना-विनाश और पालना। पालना तो होनी है नई दुनिया में। अण्डरस्टुड है तो स्थापना करेंगे, वह पालना करेंगे। ब्रह्मा स्थापना करते हैं, पालना देवता करते हैं। फिर विनाश करते हैं असुर अपना। साइंस माया भी तुमको मदद देती है। नेचरल कैलेमिटीज़ भी तुमको मदद करती है। उनको भी माया ही कहेंगे। साइंस से विनाश होता है। तो माया भी अपना विनाश करती है। देवताएँ अपना विनाश करते हैं अर्थात् देवता से बदल असुर बन जाते हैं। खेल भी इनका ही है। तुम ही पुजारी असुर थे, फिर देवता पूज्य बने। फिर अपना ही विनाश किया कि असुर बने। अभी तुम विनाश किसका नहीं करते हो। विनाश करना पाप है। माया भी ऐसी है। माया पाप में ले जाती है। बाप पुण्य में ले जाते हैं। आत्मा पुण्यात्मा बन जाती है तो यह फिर पुराना शरीर छोड़ देते हैं। फिर नया शरीर मिलता है। यह भी ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में है। तुम बच्चों को ही पार्ट मिला है बुद्धि में धारण करने का। और कोई की बुद्धि में यह बातें नहीं हैं। बाप के सिवाय और कोई बातें यह समझा नहीं सकते हैं। वह तो रांग हो जाती है। कल्प-2 तुम ही राइट्स सुनाते हो। स्थापना का कार्य बाप ही आकर करते हैं। अभी दुनिया तमोप्रधान है तो तुम सतोप्रधान बनाते हो। बाप यही शिक्षा देते हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह भी तुम जानते हो हम देवी-देवता धर्म स्थापन कर रहे हैं। तुम समझते हो हम देवी-देवताएँ फिर से बनते हैं। यह है ही प्रवृत्ति मार्ग। सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग। बाकी सभी धर्म प्रवृत्ति मार्ग वाले हैं। बड़ी भारी भूल एक ही है जिसको क्लीयर करना है अच्छी तरह। मुख्य शास्त्र में ही भूल है। तुम बच्चे ड्रामा पर अडोल रहते हो, समझते हो प्रजा बन रही है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जब स्थिरियम तुम हो जावेंगे फिर विनाश होगा। अखबारों में जब तक न पड़ा है तब तक समझा जाता है विनाश में देरी है। बाप का संदेश तो सबको मिलना है ना। प्रजा कोई थोड़ी बनती है। कोई भी शास्त्र में यह बातें हैं नहीं। सिर्फ यह अक्षर ठीक है भगवानुवाच देह सहित देह के सभी संबंध छोड़ अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करते हो तो भी तीनों रूपों में याद करना है। बाप टीचर भी है, गुरु भी है। तुम बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार निश्चय होता है। अभी कर्मातीत अवस्था को नहीं पहुँचे हैं। स्कूल की पढ़ा(ई) चल रही है। नई दुनिया को अमरपुरी कहा जाता है। अभी तुम जान जाते हो अमरपुरी किसको कहा जाता है।

तुम बड़ी रॉयल टीचर के रॉयल स्टूडेंट हो। लक्षण भी रॉयल चाहिए। पढ़ाई से ही लक्षण आते हैं। कोई भी खिट-पिट न होनी चाहिए। खिट-पिट तमोगुण की निशानी है। खिट-पिट मटके का पानी सुखा देती है। घाटा पड़ जाता है तो जैसे कि मटके का पानी सूख जाता है। किसको भी बैठ समझाना मज़ा आता है। ब्रा॰ वर्सा पाते हैं। ब्राह्मण है प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली। यह ब्राह्मण चोटी है। तुम जानते हो हमारी आत्मा बोलती है इस मुख द्वारा। आत्मा शरीर द्वारा सुनती है। यहाँ तुम जिस्मानी पढ़ाई नहीं पढ़ रहे हो। शिवबाबा रूहानी पढ़ाई पढ़ाते हैं इस शरीर द्वारा। तो तुम बच्चों को पक्का निश्चय हो जाता है। अपन को आत्मा समझना तुम घड़ी-2 भूल जाते हो। फील भी करते हो हम तीनों बाप, टीचर, गुरु को भूल जाते हैं। इतनी सहज बात में भी माया विघ्न डालती है। एक ही बाप है। बच्चों को पढ़ाते हैं, याद की यात्रा सिखलाते हैं। तो बुद्धि में विचार-सागर-मंथन का चक्र चलता रहना चाहिए। जब यहाँ बच्चे आते हैं तो अच्छी रीत धारण कर और पक्का होकर जाना चाहिए।

अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।